प्रेस विज्ञप्ति

इंडिया हेरिटेज वॉक फेस्टिवल 2018

- **बनारसी नाश्तों के साथ हेरिटेज वॉक**
- **अतीत और वर्तमान के काशी की खोज**

वाराणसी, 15 फरवरीः आप यहाँ बनारसी साड़ी की खूबसूरती का अहसास कर सकते हैं, सुगंधित और रसीले बनारसी पान का स्वाद ले सकते हैं, किसी समय ऐसे बनारसी ठग से भी आपका पाला पड़ सकता है जिसके बारे में अब तक आपने कहानियों और फिल्मों में ही देखा–सुना होगा, लेकिन यहाँ आकर आप बनारस की गलियों के लजीज व्यंजनों का स्वाद चखने का लालच नहीं छोड़ सकते जिसकी खुशबू और स्वाद आपको व्याकुल कर देगा।

सोरा कुआं के पंडितजी की आलू की कचौड़ी, राम भंडार का समोस, मलाई की पूड़ी, मलाई गिलोरी, रसवंती और कई अन्य लजीज व्यंजनों के बारे में जरा कल्पना करें। ये सभी इस शहर की मशहूर खानपान परंपरा का हिस्सा हैं जो स्वाद और खुशबू में अपरिवर्तित रहते हुए आपको लुभाते आए हैं। इनका स्वाद चखने के लिए बस आपके बटुए में थोड़ी रकम और पेट में खूब जोर की भूख होनी चाहिए।

बनारस की मशहूर गलियों में बिकने वाले इन व्यंजनों की लोकप्रियता से आप इंडिया हेरिटेज वॉक फेस्टिवल (आईएचडब्ल्यूएफ) के तहत चल रही भ्रमण श्रृंखला के दौरान रूबरू हो पाएंगे।
एक महीने तक कई शहरों में चलने वाले आईएचडब्ल्यूएफ 2018 का आयोजन भारतीय कला एवं संस्कृति की ऑनलाइन विश्वकोष सहपीडिया (sahapedia.org) तथा यस बैंक के वैचारिक मंच यस ग्लोबल इंस्टीट्यूट की सांस्कृतिक शाखा यस कल्चर के संयुक्त तत्वाधान में किया जा रहा है। इसका मकसद नागरिकों को अपने शहरों एवं नगरों की मूर्त एवं अमूर्त विरासत के बारे में जानने के लिए प्रोत्साहित करना है।

वाराणसी की दो में से पहली सैर 17 फरवरी (शनिवार) को आयोजित की जाएगी और इसका नेतृत्व शहर की प्राचीन संस्कृति एवं मानव सभ्यता को संरक्षित करने के लिए दिलोजान से तत्पर इतिहासकार अजय रतन बनर्जी करेंगे। वह इसमें शामिल लोगों को वाराणसी की गलियों की सैर कराएंगे और दिलचस्प अंदाज में वहाँ की खानपान परंपराओं के पीछे के किस्से सुनाएंगे।

इस श्रृंखला की दूसरी सैर 24 फरवरी (शनिवार) को आयोजित की जाएगी और स्थानीय नागरिकों को काशी (अब वाराणसी) के दौरे पर ले जाया जाएगा, जिसे इतिहास, परंपराओं और पौराणिक कथाओं के दौर से भी प्राचीन नगरी माना जाता है– एक ऐसी नगरी जो श्रद्धालुओं को मोक्ष और शाश्वत सुख पाने के लिए आकर्षित करती रही है।
इस सैर के तहत सबसे पुराने जीवंत शहर की प्राचीन और विस्मृत धरोहर की यात्रा कराई जाएगी। इसमें शामिल लोगों को शहर के कुछ पुराने बाजारों, वाराणसी की संकरी और रहस्यमय गलियों में ले जाते हुए चहल–पहल और संतुष्टि से परिपूर्ण एक अनजान दुनिया से वाकिफ कराया जाएगा।

अपनी गृहनगरी वाराणसी से ही ग्रैनीज इन (www.grannysinn.in) संचालित करने वाली 70 वर्षीया साहसी महिला ग्रैनी आशा और मयूर ढाई घंटे की इस सैर का नेतृत्व करेंगे। आशा को लोगों की खातिरदारी करना पसंद है और वह भारत की कुछ प्राचीन खानपान शैलियों की संरक्षक हैं। ग्रैनीज इन को 'इंडिविजुअली–रन होमस्टे' श्रेणी में 2018 के आउटलुक रेस्पांसिबल टूरिज्म अवार्ड के लिए चुना गया है। इस सैर–सपाटे की भागीदार संस्था अनहोटल है जिसने ऐसे दुर्लभ ठिकानों पर असाधारण, आत्मिक मेजबानी की व्यवस्था शुरू की है जो गुणग्राही सैलानियों के लिए किसी खजाने से कम नहीं हैं।

इस सैर–सपाटे और आईएचडब्ल्यूएफ 2018 के अन्य कार्यक्रमों, मैप रूट तथा पंजीकरण सूचना के बारे में विस्तृत जानकारी http://www.indiaheritagewalkfestival.com पर उपलब्ध है।

फेस्टिवल निदेशक (आईएचडब्ल्यूएफ) और सहपीडिया के सचिव वैभव चौहान कहते हैं, "इंडिया हेरिटेज वॉक फेस्टिवल 2018 उन सभी चीजों का जश्न है जिनके लिए सहपीडिया जानी जाती है। अपनी समृद्ध विरासत और संस्कृति की विश्वसनीय, प्रामाणिक और संपूर्ण विषय वस्तु निर्मित करने के प्रयास के तहत हम देशभर में सांस्कृतिक कार्यकर्ताओं का एक नेटवर्क विकसित कर रहे हैं। यह उत्सव इस समस्त भारत मुहिम का एक हिस्सा है जिसमें धरोहर स्थलों को अधिक लोकप्रिय, अधिक सुगम और अधिक अनुभवजन्य बना रहे हैं।"

यस बैंक के एमडी और सीईओ तथा यस ग्लोबल इंस्टीट्यूट के चेयरमैन राणा कपूर कहते हैं, "भारत को समृद्ध धरोहर और सांस्कृतिक इतिहास का वरदान मिला हुआ है जहां हर कोने में स्मारकों और वास्तुकला नमूनों की खान मौजूद हैं। हमारे राष्ट्रीय धरोहर में हेरिटेज वॉक जैसी गतिविधियों से सिविल सोसायटी की भागीदारी सुदृढ़ होती है और इन स्थलों के संरक्षण और सुरक्षा का यह एक अभिन्न हिस्सा बन गई है। इस तरह की धरोहर पर्यटन मुहिमों में स्थानीय समाज तथा नागरिकों की तहेदिल से भागीदारी और संलग्नता राष्ट्र गौरव की भावना बढ़ाने की क्षमता रखती है और साथ ही धरोहर के विकास का एजेंडा भी पूरा होता है।"

यस बैंक इंस्टीट्यूट की ग्लोकल संयोजक प्रीति सिन्हा कहती हैं, "21वीं सदी के भारत में धरोहरों की समझ ऐतिहासिक भवनों और स्मारकों की सुरक्षा से लेकर व्यापक संदर्भ में मूर्त एवं अमूर्त सांस्कृतिक स्वरूपों की सामान्य समझ और संरक्षण पर अधिक केंद्रित होने तक विकसित हुई है। दौरों, चर्चाओं और फिल्म तथा सोशल फोरम जैसे डिजिटल मीडिया के जरिये निर्मित, प्राकृतिक एवं सजीव धरोहर के साथ सक्रिय संलग्नता से यह महोत्सव ऐतिहासिक संवेदनशील नीति बनाने एवं नीति निर्धारण की दिशा में प्रबुद्ध सोच विकसित करने का एक पैमाना है।"

आईएचडब्ल्यूएफ 2018 के तहत देशभर के 20 शहरों और नगरों को शामिल किया गया है जिसमें ऐतिहासिक स्मारकों, पवित्र स्थलों, जाने–माने स्थलों, कला एवं संस्कृति के लिए मशहूर स्थानों, व्यंजनों और प्रसिद्ध व्यापारिक स्थलों का दौरा किया जाना शामिल है। इसके तहत सांस्कृतिक विषयों और व्याख्यान शृंखला पर आधारित एक ऑनलाइन डॉक्यूमेंटरी फिल्म समारोह भी आयोजित किया जा रहा है जिसे पूरे महीने चलने वाले लगभग 70 कार्यक्रमों की बैठकों और मिलन समारोहों से संचालित किया जाएगा।